eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

बी0एड0 कार्यक्रम के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षुओं के जेंडर संवेदीकारण का अध्ययन

रीना रानी आर्या[1] एवं दीप्ति जौहरी[2]
[1]शोधार्थिनी शिक्षाशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली, उत्तर प्रदेश भारत
[2]प्रोफेसर एवं अध्यक्ष शिक्षाशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली उत्तर प्रदेश भारत।

Received: 20 July 2025 Accepted & Reviewed: 25 July 2025, Published: 31 July 2025

Abstract

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में जहां पितृसतात्मक सोच गहराई तक जडें पसारी हुई है वहां जेंडर संवेदीकारण की दिशा में सार्थक प्रगति हेतु शिक्षा एक सशक्त औजार है परंतु शिक्षक की भूमिका केंद्रीय और निर्णायक सिद्ध होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में बी0एड0 कार्यक्रम के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षुओं के जेंडर संवेदीकरण का अध्ययन किया गया है। इसमें दोनों क्षेत्रों के भावी शिक्षकों की जेंडर संवेदीकरण की भिन्न–भिन्न आवश्यकताओं, चुनौतियों को जानने का प्रयास किया गया है। सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए टी परीक्षण द्वारा निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं। शोध पत्र में बी0एड0 कार्यक्रम में जेंडर संवेदीकरण प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी बनाते हेतु सुझाव दिए गए हैं।

मुख्य शब्द– शिक्षक, शिक्षा कार्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षु, जेंडर संवेदीकरण, जेंडर समानता, 'जेंडर, विद्यालय एवं समाज पाठयक्रम', जेंडर संवेदी शिक्षा।

Introduction

शिक्षा न केवल जानकारी देने का माध्यम है बल्कि यह सामाजिक सोच और दृष्टिकोण को आकर देती है, ज्ञान का हस्तांतरण करती है तथा व्यक्तित्व निर्माण सामाजिक मूल्यों के विकास और व्यवहारगत बदलावों का माध्यम भी बनती है। स्कूल और कक्षा वह स्थान है जहां बच्चे न केवल एकेडमिक ज्ञान प्राप्त करते हैं बल्कि सामाजिक मूल्यों, मापदंडों और दृष्टिकोणों का विकास करते हैं। वे एक अधिक संवेदनशील और समतामूलक समाज के निर्माण में योगदान देते हैं। इस प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका सर्वोपरि है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में जहां पितृसतात्मक सोच गहराई तक जमी हुई है वहाँ जेंडर संवेदीकरण की दिशा में सार्थक प्रगति के लिए शिक्षा एक सशक्त औजार के रूप में उभरती है। यदि शिक्षक स्वयं जेंडर पूर्वाग्रहों से ग्रसित होंगे तो वे अनजाने में भी उन पूर्वाग्रहों को छात्रों तक पहुंचा सकते हैं जिससे समाज में जेंडर समानता की खाई और गहरी हो सकती है। राष्ट्रीय काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन (एनसीटीई) ने बी0एड0 कार्यक्रम में विद्यालय एवं समाज के संदर्भ में जेंडर एवं समावेशी पाठयक्रम को सम्मिलित किया। राष्ट्रीय अध्यापन शिक्षा पाठ्यचर्चा प्रारूप (2009) में बी0एड0 के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में जेंडर असमानता के मुद्दों को पाठयक्रम का महत्वपूर्ण अंग बनाया गया है। यह पाठयक्रम प्रमुख जेंडर अवधारणाएँ और जेंडर समाजीकारण प्रक्रियाएँ पाठयक्रम और शिक्षाशास्त्र में जेंडर मुद्दे, जेंडर समावेशी कक्षाएँ बनाने की रणनीतियां जेंडर आधारित हिंसा को संबोधित करने और लड़कियों के मध्य सकारात्मक आत्म अवधारणा को बढ़ावा देने जैसे अनेक बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करता है। अतः शिक्षकों में जेंडर संवेदीकरण का विकास करने हेतु बी0एड0 कार्यक्रम के पाठयक्रम में 'जेंडर, विद्यालय एवं समाज' विषय को शामिल किया गया। वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए शिक्षक प्रशिक्षुओं में जेंडर संवेदीकरण एक आवश्यक प्रक्रिया है क्योंकि वे भावी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

शिक्षक होते हैं उनकी शिक्षण पद्धतियों और कक्षा के वातावरण को आकार देने में विशिष्ट भूमिका होती है। वे ही बच्चों के विचारों और व्यवहारों को आकार देते हैं। अतः जेंडर संवेदनशील समाज की दिशा में शिक्षक की भूमिका केंद्रीय और निर्णायक सिद्ध होती है।

जेंडर संवेदीकरण की अवधारणा–

जेंडर संवेदित शिक्षा– जेंडर संवेदित शिक्षा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो बालको और बालिकाओं के बीच किसी प्रकार के भेदभाव को नकारते हुए समान अवसर, सम्मान और व्यवहार को बढ़ावा देती है अर्थात जेंडर संवेदी शिक्षा का अर्थ ऐसी शिक्षा से है जो समानता, समावेशन व न्याय की भावना को प्रोत्साहित करती है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में लैंगिक समानता के प्रति संवेदनशीलता व समझ विकसित करना और पितृसतात्मक सोच को चुनौती देना है।

जेंडर संवेदीकरण– जेंडर संवेदीकरण का तात्पर्य जेंडर संबंधित मुद्दों रूढ़िवादिता और भेदभाव के प्रति जागरूकता पैदा करना है। इसका उद्देश्य लोगों को यह समझने में मदद करना है कि सेक्स जैविक होता है जबकि जेंडर एक सामाजिक और सांस्कृतिक निर्मिती है। यह व्यक्ति के व्यवहार, दृष्टिकोण और विचार प्रक्रिया को इस तरह से संशोधित करने का प्रयास करता है कि समाज में पुरुष और महिला दोनों को समान माना जाए और किसी प्रकार के लिंग आधारित पूर्वाग्रह या भेदभाव से बचा जा सके। यह प्रक्रिया लोगों को यह समझाने में मदद करती है कि पुरुष और महिला के साथ समाज में कैसा व्यवहार किया जाए? यह व्यवहार कैसे भेदभावपूर्ण या असमान हो सकता है। जेंडर संवेदीकरण, समान और न्यायपूर्ण समाज की ओर एक जरूरी कदम है जहाँ किसी को केवल उनके लिंग के आधार पर उपेक्षित ना देखा जाए और उनसे भेदभाव ना किया जाए। शिक्षक के संदर्भ में इसका अर्थ है कक्षा एवं विद्यालय परिसर में लैंगिक रूढ़िवादिता को पहचानना और चुनौती देना। सभी छात्रों को उनकी लिंग पहचान के बावजूद समान अवसर प्रदान करना। जेंडर संवेदनशील पाठयक्रम और शिक्षण सामग्री का उपयोग करना, शिक्षकों के अपने व्यक्तिगत व्यवहार और बातचीत में लैंगिक पूर्वाग्रहों को दूर करना, स्कूल और समुदाय के भीतर जेंडर भेदभाव को सक्रिय रूप से चुनौती देना। बी0एड0 कार्यक्रम में जेंडर संवेदीकरण का समावेश भविष्य के शिक्षकों को जेंडर संवेदनशील शिक्षण पद्धतियाँ विकसित करने और कक्षा में एक समावेशी न्यायपूर्ण और सहायक वातावरण बनाने के लिए सशक्त बनाना है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के बीच सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति में काफी भिन्नता पाई जाती है। यह विभिन्नताएँ शिक्षक प्रशिक्षुओं के जेंडर दृ ष्टिकोणों और संवेदीकरण की आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। इसीलिए इन दोनों क्षेत्रों के शिक्षक प्रशिक्षुओं की जेंडर संवेदीकरण की स्थिति का अध्ययन करना और उनके लिए सबसे उपयुक्त प्रशिक्षण रणनीतियों का पता लगाना अत्यंत आवश्यक है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन जेंडर संवेदीकरण में शिक्षकों की भूमिका पर आधारित रायप्रेल, रमन, फारूकी और जोशी (2023), सेवानी एवं काबरा (2023), वर्मन (2021), नकवी (2021), मसूद (2021), सिंह (2020), कुमार (2017), अग्रवाल एवं शुक्ला (2017), बुड (2017), टागर एवं इमैन्यूल (2001) के शोधों से ज्ञात हुआ है कि शिक्षक स्कूल और समाज दोनों के महत्वपूर्ण सदस्य हैं और बच्चों के दृष्टिकोण एवं विचारधाराओं को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक बचपन से छात्रों के मन में जेंडर के प्रति सकारात्मक विचारधारा का निर्माण कर सकते हैं तभी युवा होने पर उन्हें जेंडर संवेदीकरण के प्रति

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

प्रभावशाली दृष्टिकोण एवं प्रतिबद्धता का विकास होगा। छात्रों को जेंडर संवेदीकरण वातावरण देने में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (बी0एड0) में जेंडर संवेदी शिक्षा की भूमिका पर आधारित पद्मनाभ (2023), अनंगा (2001), मीना (2020), सिंह (2020), अख्तर (2012) के शोधों से ज्ञात होता है कि भावी शिक्षकों की जेंडर भूमिका बी0एड0 कार्यक्रम में जेंडर संवेदी शिक्षण, जेंडर संवेदीकरण स्तर और शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में जेंडर असमानता पाई जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार जेंडर समिति शिक्षा को बी0एड0 के पाठयक्रम में मुख्य भाग में आवश्यक रूप से शामिल करना चाहिए। जेंडर संवेदीकरण में शिक्षक शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह भावी शिक्षकों को कक्षा कक्षों में तैयार के लिए तैयार करती हैं। जेंडर समानता हेतु पाठयक्रम में बदलाव शिक्षक प्रशिक्षुओं द्वारा समानता का व्यवहार और शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे जेंडर संवेदीकरण की समझ विकसित होगी और जेंडर समानता में कमी आएगी।

शोध अध्ययनों के सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि जेंडर संवेदीकरण में शिक्षक की भूमिका जेंडर संवेदी में शिक्षा की आवश्यकता और शिक्षण प्रक्रिया पर तो बहुत अध्ययन हुए परंतु बी0एड0 कार्यक्रम के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षुओं के जेंडर संवेदीकरण को ज्ञात करने हेतु कोई शोध नहीं किया गया। अतः प्रस्तुत शोध पत्र हेतु शोधार्थिनी ने 'बी0एड0 कार्यक्रम के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षुओं के जेंडर संवेदीकरण का अध्ययन' शोध समस्या का चयन किया।

शोध का महत्व यह शोध निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है– यह शहरी और ग्रामीण शिक्षण प्रशिक्षुओं के जेंडर दृष्टिकोण में अंतर को समझने में मदद करेगा जिससे अधिक लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किया जा सकेंगे। यह जेंडर रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रहों की पहचान करने में सहायक होगा जो शिक्षकों के माध्यम से प्रशिक्षुओं तक पहुंच सकते हैं। यह समावेशी कक्षा वातावरण बनाने के लिए प्रभावी रणनीतियों और शिक्षण पद्धतियों को विकसित करने में योगदान देगा। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और सतत विकल्प लक्ष्यों के अनुरूप जेंडर समानता को बढ़ावा देने में भावी शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करेगा ।

शोध उद्देश्य

–शहरी शिक्षक प्रशिक्षुओं में जेंडर संवेदीकरण का अध्ययन करना।

–ग्रामीण शिक्षण प्रशिक्षुओं के जेंडर संवेदीकरण का अध्ययन करना।

परिकल्पना – शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षुओं के जेंडर संवेदीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि – शोध विधि प्रश्न के आधार पर शोधार्थिनी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

न्यादर्श शोध हेतु बरेली मंडल के समस्त बी0एड0 संस्थानों में से 20 संस्थानों का चयन द्वारा किया गया। उसके बाद उपलब्धता के आधार पर कुछ 400 शिक्षक प्रशिक्षुओं का चयन किया गया।

उपकरण शोध में स्वनिर्मित जेंडर संवेदीकरण प्रश्नावली का उपयोग आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु किया गया।

प्रदत्तों की प्रकृति – शोध उद्देश्यों के लिए प्रश्नावली के माध्यम से प्राथमिक स्रोत के रूप में बी0एड0 कार्यक्रम में पढ़ने वाले शिक्षक प्रशिक्षुओं से आंकड़ें अंकों के रूप में (मात्रात्मक) प्राप्त हुए।

शोध क्रियान्वयन चयनित बी0एड0 संस्थानों के शिक्षक प्रशिक्षुओं पर मापनी का प्रशासन किया गया। 400 प्रश्नावलियों में से कुछ प्रशिक्षुओं की प्रश्नावली अपूर्ण और कुछ के एक से ज्यादा उत्तर देने के कारण रद्द

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

कर दिये गए। शेष 340 प्रशिक्षुओं को अंतरिम न्यादर्श मानकर विश्लेषण एवं विवेचना कर निष्कर्ष प्राप्त किए गए।

सांख्यिकी प्रविधि शोध के उद्देश्यों एवं परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी ने आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया है जिसके लिए एम एस एक्सेल एवं आईबीएम एसपीएसएस का प्रयोग किया गया।

विश्लेषण एवं विवेचन– शोध पत्र को पूर्णता प्रदान करने हेतु प्राप्त आंकड़ों का सारणीयन, विश्लेषण एवं विवेचन निम्न प्रकार किया गया–

तालिका

ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक प्रशिक्षुओं के जेंडर संवेदीकरण में अंतर–

	N	Mean	SD	T-value	Significant Level
				0-026	NS Not Significant
Rural	153	126.61	8.533		
Urban	187	126.65	13.577		

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षुओं के जेंडर संवेदीकरण के प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ग्रामीण शिक्षण प्रशिक्षुओं के प्राप्तांको का माध्यम 1261 एवं मानक विचलन 8.533 तथा शहरी शिक्षक प्रशिक्षुओं के प्राप्तांकों का माध्यम 126.65 एवं मानव विचलन 13.577 पाया गया। दोनों समूह का टी मान है 0.026 पाया गया। जो यह प्रदर्शित करता है कि ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक प्रशिक्षुओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक प्रशिक्षुओं के जेंडर संवेदीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इस आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। उपरोक्त आधार पर स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षक प्रशिक्षुओं का जेंडर संवेदीकरण–

पारंपरिक रूढ़िवादिता की गहरी जड़ें– ग्रामीण क्षेत्रों में लैंगिक भूमिका अक्सर अधिक पारस्परिक और कठोर होती है। लड़कियों की शिक्षा, गतिशीलता और करियर विकल्पों का अधिक प्रतिबंध हो सकते हैं।

सीमित एक्स्पोजर– शहरी क्षेत्रों की तुलना में मीडिया प्रगतिशील विचारों और बाहरी दुनिया से कम संपर्क के कारण लेंगिक मुद्दों के बारे में जागरूकता कम हो सकती है।

शैक्षिक संसाधनों की कमी– लैंगिक संवेदीकरण के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों विशेषज्ञों और सामग्री तक पहुंच सीमित हो सकती है।

पारिवारिक दबाव और सामाजिक मापदंड– शिक्षा प्रशिक्षु स्तंभ ऐसे परिवारों और समुदायों से आ सकते हैं जहां लैंगिक भेदभाव सामान्य है जिससे उनके लिए इन विचारों को चुनौती देना मुश्किल हो सकता है।

लड़कियों के शिक्षा में चुनौतियां– ग्रामीण क्षेत्र में लड़कियों के लिए शिक्षा तक पहुंच सीमित होती है जैसे दूर के स्कूल, सुरक्षित वातावरण की कमी, घरेलू काम का बोझ, बाल विवाह आदि जिससे शिक्षक प्रशिक्षुओं को इन बाधाओ को समझने और दूर करने हेतु विशेष संवेदीकरण की आवश्यकता होती है।

शहरी क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षुओं का जेंडर संवेदीकरण

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

जागरूकता का स्तर– शहरी क्षेत्रों में मीडिया इंटरनेट और विभिन्न सामाजिक आंदोलन तक अधिक पहुंच के कारण लैंगिक मुद्दों के बारे में सामान्य जागरूकता का स्तर ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में अक्सर अधिक होता है।

पारंपरिक रूढ़िवादिता में कमी –हालांकि शहरी क्षेत्र में भी रूढ़िवादिता मौजूद है लेकिन यह ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में कम कठोर हो सकती है। लोग नए विचारों और प्रगतिशील सोच के प्रति अधिक खुले हो सकते हैं।

शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता– शहरी क्षेत्रों में लैंगिक संवेदीकरण के लिए अधिक प्रशिक्षण संस्थान विशेषज्ञ कार्यशाला एवं संसाधन उपलब्ध होते हैं।

महिला शिक्षा और सशक्तिकरण– शहरी क्षेत्रों में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा और कैरियर से अधिक अवसर होते हैं जिससे लैंगिक समानता के प्रति एक अलग दृष्टिकोण विकसित होता है।

समतावादी परिवार संरचनाएं– कुछ शहरी परिवारों में परिवारों के भीतर निर्णय लेने और घरेलू जिम्मेदारियां में अधिक समानता देखी जा सकती है। जो शिक्षक प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण को प्रभावित करती है।

शोध के निहितार्थ एवं सिफारिशें –प्रस्तुत शोध पत्र बी0एड0 कार्यक्रम के पाठयक्रम में लैंगिक संवेदीकरण प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित निहितार्थ और सिफारिश में प्रदान करता है –

1. **संदर्भ विशिष्ट प्रशिक्षण मॉडयूल**

–शहरी प्रशिक्षुओं हेतु प्रशिक्षण में सूक्ष्म लैंगिक पूर्वाग्रहों, कार्यस्थल में लैंगिक समानता एलजीबीटी प्लस मुद्दू और पितृसत्ता के आधुनिक रूपों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

–ग्रामीण प्रशिक्षुओं हेतु प्रशिक्षण में लड़कियों की शिक्षा के महत्व घरेलू श्रम के समान वितरण, बाल विवाह के मुद्दे, दहेज प्रथा और समुदाय में महिलाओं की भागीदारी पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

2. **नवीन शिक्षण पद्धतियां** दोनों क्षेत्रों ने में प्रशिक्षण को व्याख्यान आधारित के बजाय इंटरएक्टिव और अनुभवात्मक होना चाहिए।

शहरी प्रशिक्षुओं हेतु केस स्टडी, डिबेट आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों और जेण्डर संवेदनशील मीडिया विश्लेषण प्रभावी हो सकते हैं।

–ग्रामीण प्रशिक्षुओं हेतु कहानी सुनाना, रोल प्ले, स्थानीय उदाहरणों का उपयोग समुदाय के प्रभावशील व्यक्तियों के साथ बातचीत और जमीनी स्तर पर जेंडर समानता के लिए काम करने वाले संगठनों का द्वारा अधिक प्रभावशाली हो सकता है।

3. संसाधन और समर्थन– लैंगिक संवेदनशील पुस्तकें, शिक्षण सामग्री और सहायक संसाधन उपलब्ध कराने जाने चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों तक पहुंच सुनिश्चित करना और स्थानीय भाषाओं में सामग्री विकसित करना महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण के बाद भी निरंतर परामर्श और मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए तंत्र स्थापित किए जाने चाहिए।

4. प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण– लैंगिक संवेदीकरण प्रशिक्षण देने वाले प्रशिक्षकों को स्वयं इन मुद्दों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होना चाहिए और उन्हें शहरी और ग्रामीण दोनों संदर्भो की चुनौतियों को समझने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

5. सामुदायिक और पारिवारिक भागीदारी– विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में परिवारों और समुदायों को संवेदीकरण प्रक्रिया में शामिल करना आवश्यक है। जागरूकता कार्यशालाएं और सामुदायिक संवाद आयोजित

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

किए जा सकते हैं ताकि स्कूलों और घरों में लैंगिक समानता के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण विकसित हो सके। नीतिगत एकीकरण और मूल्यांकन जेंडर संविधीकरण को बी0एड0 कार्यक्रम में यह अनिवार्य और मूल्यांकन घटक के रूप में एकत्रित किया जाना चाहिए। नियमित मूल्यांकन और प्रतिक्रिया तंत्र यह सुनिश्चित करने में मदद करेंगे कि प्रशिक्षण प्रभावित है और प्रशिक्षकों के दृष्टिकोण में वास्तविक बदलाव ला रहा है।

निष्कर्ष –शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि के शिक्षक प्रशिक्षकों में लैंगिक संबंधिकरण की आवश्यकता स्पष्ट रूप से विभिन्न होती है। यह शोध पत्र यह दर्शाता है कि एक दृष्टिकोण सभी पर प्रभावी नहीं हो सकता। लक्षण संदर्भ विशिष्ट और अनुभव आत्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम ही प्रभावी जेंडर समिति कारण सुनिश्चित कर सकते हैं। जब भविष्य के शिक्षक स्वयं लैंगिक रूप से संवेदनशील होंगे तभी वह एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर पाएंगे जो जेंडर समानता और समावेश के मूल्यों को आतंकवाद कर पाएगी जिससे एक अधिक महत्वपूर्ण और समतावादी समाज का मार्ग प्रशस्त होगा। यह एक सतत प्रक्रिया है जिसके लिए निरंतर अनुसंधान अनुकूलन और दृढ़ प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची–

1- Tatar and Emmanul (2001), Teacher "Perceptions of Their Student's Gender role' The Journal of Education Research, 94(4), 215-224 Retrieved from: https//www.jstor.org/stable/27542326 Accessed on 26/8/2020

2- Wood, (2017), Teacher Perception of Gender Based Differences Among Elementary School Teacher, International Electric Journal of Elementary Education. 4(2), 317-345 Retrieved from: www.jstore.org

3- Accessed on 10/4/19

4- Agarwal, C and Shukla, N.M. (2017) A study of In-Service Teacher's Attitude Towards Gender Issues, Educational Quest; New Delhi 8(1), 187-192 Retrieved from: scholar. Google.co.in Doi: 10.5958/2230-7311,2017.000289 Accessed on 18/8/19

5- Kumar T. (2017), Sikshak Shkischhikoon Ke Gender Stereotype ka Unke Sikshan Kary per Padene Wale Prabhav ka Adhayayan, Banaras Hindu University. Retrieved from: http://hdl.handle.net/10603/275354

6- Shodhganga.inflibnet.ac.in Accessed on 3 march/2021

7- Masood (2021), Gender Sensitization and Educational Institutions, Research Review International Journal of Multidisciplinary, 6(4), 46-50 Retrieved from: https://doi.org/10.31305/mijm.2021.v06.i04.009

8- Naqvi (2021) Prospective Teacher Perception of Gender Roles Education and Stereotype, Academia Journal of Educational Research .9(a), 161-165 Retrieved from: DOI:10.15413/ajer.2021.0116 Accessed on 8/11/24

9- Burman (2021), Role of Teacher's in Creating Gender Sensitised Classroom to Bridge Gender and Social Gap, International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM), 03(02), 33-36 Retrieved from: DOI: 10.35629/5252-03023336

10- Singh (2022), Gender Sensitization and Teacher, the International Journal of Advance Research in Multidisciplinary Science (IJARMS) 5(1), 107-114 etrieved from: https://journal.ijarms.org/india.php/ijarms/article/view/251

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

11- Kabra and Sewani (2023), A study of Gender Sensivity Towards Gender Discrimination Among Prospective Secondary School Teacher, International Journal of Novel Research and Devolvement (IJNRD), 8(5), pp-808-812 Retrieved from: www.ijnrd.org

12- Rayaprol, Raman, Farooqui and Joshi (2023), Gender Sensitization for School Teacher: Agents of Change in the Classroom, Sage Journals. 72 (4), 534-545 Retrieved from: https://doi.org/10.1177/00380229231196768

13. सिंह, के (2018) जेंडर संवेदीकरणः शिक्षक शिक्षा की भूमिका, ई–चेतना इण्टरनेशनल एजुकेशनल जर्नल।

14. जे. व्यास. आशुतोष. (2014). जेंडर समानता और महिला सशक्तिकरण, जयपुरः आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीव्यूटर्स।

15. ओकले, ए. (2000), सैक्स, जेंडर और सोसायटी, द यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन, एशिया पब्लिशर्स

16. जौहरी, दीप्ति (2017), लिंग, स्कूल तथा समाज, मेरठ, आर. लाल डिपो पृष्ठ सं0 103–108